International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, Jan- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद महिला–लेखन का बदलता स्वरूप

डॉ. सरला पण्ड्या
हिन्दी विभाग
कार्यवाहक प्राचार्य,
हरिदेव जोशी राजकीय
कन्या महाविद्यालय
बाँसवाड़ा

साहित्यकार प्रवाहमान जीवन के कार्य व्यापार को रेखांकित और रूपायित करता है। वह युग, काल और समाज की बदलती मानसिकता को रूपायित करता है। हमेशा जिज्ञासु रहकर साहित्य रचना करता है। इसमें साहित्य के भाव पक्ष के साथ कला पक्ष, रचना का रूप, छन्द, शब्द चयन, भाषा आदि का स्वरूप भी बदलता रहता है।

स्वतंत्रता के बाद नव जागरण तथा आधुनिकीकरण ने भारतीय नारी की जीवन दृष्टि में व्यापक बदलाव किया है। पुरानी परंपराओं की जकड़न से वह मुक्त होकर जीवन के सभी नये आयामों को अपनाना चाहती है। नारी की इस बदलती सोच से व्यक्ति एवं समाज का नजरिया भी बदला है।

वैश्वीकरण एवं उदारीकरण में महिला लेखन का स्वरूप बदल दिया है। महिला साहित्यकारों ने नारी की सामाजिक नियति और मानसिकता को गहराई से उकेरा है। घर, पुरुष, कामकाज, प्रेम, रिश्ते, अर्थ अधिकार और संवेदना के बीच स्त्री का अस्तित्व नये विकल्प तलाशता नजर आ रहा है। इन सभी मसलों पर महिला लेखिकाओं ने साहित्य रचना की है। स्त्री के नये तेवर अस्मिता एवं वैचारिक सोच को इन लेखिकाओं ने नई दिशा दी है।

मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, प्रभा खेतान, नासिरा शर्मा, राजी सेठ, चित्रा मुद्गल, ममता कालिया और मैत्रेयी पुष्पा आदि प्रमुख महिला लेखिकाएँ हैं। महिला कथाकारों ने महिला जीवन की नाना समस्याओं, रूढ़ियों, परम्पराओं की जकड़न को अधिक संजीदगी के साथ बयान किया हैं। उन्होंने समकालीन समस्याओं जैसे 'दाम्पत्य' जीवन में दरार और विघटन, उनका आर्थिक, मानसिक और शारीरिक शोषण, उनको समानता का अधिकार न मिलना, उनको दोयम दर्जे का मानना, उन्हें विकास का पर्याप्त

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, Jan- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अवसर न देना, उनकी अस्मिता पर उठते प्रश्न चिह्न, कामकाजी महिलाओं का आत्म संघर्ष (पति–पत्नी के मध्य, मातृत्त्व एवं कार्यशीलता के मध्य, अपने सहयोगियों के मध्य) नैतिकता एवं आधुनिकता का द्वन्द्व' इन विषयों पर महिला कथाकारों ने निष्ठापूर्वक लिखा हैं।

इन महिला कथाकारों ने इक्कीसवीं सदी की नारी के विविध चेतनात्मक स्तरों को व्यक्तित्व और गरिमा प्रदान करने का सफल प्रयास भी किया है। कथा साहित्य में महिला कथाकारों ने दाम्पत्य जीवन की समस्याओं को प्रमुखता से उभारा है। महिला कथाकारों ने अपने अनुभवों के आधार पर नारी मन की स्थिति को विशिष्टता तथा सुघड़ता से अभिव्यक्ति दी है। दाम्पत्य जीवन की आदर्श स्थिति और वास्तविकता वर्तमान यथार्थ के साथ बहुत बदल चुका है। बौद्धिकता के आगे धर्म और भावनाएँ विलुप्त होने के कगार पर हैं। सौंदर्यबोध भाव चेतना, बौद्धिक संघर्ष अपेक्षाकृत बढ़ते जा रहे है, वर्तमान हिन्दी कथा साहित्य में जीवन का विस्तार कई रूप और आयामों में हुआ है।

भौतिकवादी युग की दौड़ में सर्वाधिक संघर्षशील जीव है– नारी। घर में तो उसकी हालत दयनीय थी, अब बाहर निकलने लगी तो अपने व्यक्तित्व में या अस्मिता की खोज में तल्लीन है। आज के समाज में उसकी अलग भूमिकाएँ है जैसे – गृहणी, कामकाजी, लेखिका आदि। घर परिवार और बाहरी नारी की यातनाओं के चित्रण में सहजता इसलिए उभर पा रही है कि इसके पीछे के अनुभूत सत्यों का उल्लेख है। प्रेम की उपलब्धि, परिपूर्णता की खोज, समर्पण मूलक पीड़ाओं की गाथाएँ आदि को महिला उपन्यासकारों ने अपने नारी पात्रों द्वारा छोटी–छोटी सूक्ष्म घटनाओं की पृष्ठभूमि में अंकित किया है। महिला लेखन में स्वभावतः यह पहलू जरूर है कि उसमें महिलाओं की प्रतिनिधि होकर महिलाओं के पक्ष में सोचा जा रहा है। आधुनिक महिला कथा साहित्य लेखन में विद्रोह एवं असन्तोष का स्वर मुखरित है। ''नारी वंचिता एवं पीड़िता के रूप में चित्रित करते करते कुछ लेखिकाएँ स्वयं अपने नारी पात्रों के साथ इतनी अधिक समायोजित हो गई है कि संघर्ष की बागडोर अपने हाथ में ले वे परम्परागत नैतिक मूल्यों की धज्जियाँ उड़ा व्यक्तिगत नैतिकता की वकालत करती प्रतीत होती है।''[1] महिला कथा साहित्य लेखन में इक्कीसवीं सदी की नारी के विभिन्न सामाजिक, पारिवारिक, मानसिक और आर्थिक समस्याओं का खुलकर चित्रण किया गया है। इन साहित्यकारों ने अपने नारी पात्रों द्वारा विवाह संस्था के प्रति अपनी अनास्था प्रकट की है। वैवाहिक बंधंनों में बँधकर मुक्ति पाने हेतु संबंध बनाना, वैवाहिक जीवन की यंत्रणा में पड़कर अपनी अस्मिता को खोजना आदि प्रवृत्तियों का चित्रण किया गया है। महिला कथा साहित्य लेखन में समर्पणशील,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, Jan- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अहं की चाह में भटकने वाली नारी पात्रों को हम देख सकते है। आज के युग के पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक, वैचारिक यथार्थ में परिवर्तन आए हैं। इस परिवर्तन का प्रतिफल महिला कथा साहित्य लेखन को सशक्त बनाना है। यह विधा ————————————————————

1. रोहिणी : *एक नजर कृष्णा सोबती पर,* पृ. 19

आज स्त्री से जुड़े मानसिक, शारीरिक पहलुओं संबंधी नये–नये कथानकों को प्रस्तुत करके आगे बढ़ रही है।

उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में मनुष्य के टुटने और जुड़ने की बहुमुखी कहानी 'कथा' नारी को दिशा प्रदान करती है। परिवार और उसके विघटन की पृष्ठभूमि में सहज और सरल मानवीय व्यवहार का आवरण और विडम्बना कहानियों का मूल आधार है। मन्नू भंडारी ने उपन्यास 'आपका बंटी' में नायिका 'शकुन' को पति द्वारा छोड़ने पर दूसरा विवाह करने की पहल करना, समाज को नई दृष्टि प्रदान करता है। महिला लेखिकाओं को निर्भीकता से व्यक्त करते हुए उषा प्रियंवदा 'प्रतिध्वनियाँ' कहानी में विवाहित जीवन से मुक्त होकर स्वतंत्र अस्तित्व का बोध करने वाली स्त्री का चित्रण करती है। 'जिन्दगी और गुलाब के फूल' में अर्थ के केन्द्र में यदि स्त्री है तो पुरुष का अहं कैसे आहत होता है, इसका सजीव चित्रण मिलता है। उनकी 'कितना बड़ा झूठ' और 'मोहबंध' कहानियों में आधुनिक भारतीय समाज में वैवाहिक जीवन की असंगतता और दिखावे की स्थितियों को प्रस्तुत किया गया है। 'कितना बड़ा झूठ' कहानी की किरण नौकरीपेशा आधुनिक स्त्री है। उसके मन में पति और बच्चों से मिलने की इच्छा नहीं है। वह चाहती है मैक्स का स्पर्श, दैहिक सुख। विवाहेत्तर संबंधों का सहज स्वीकार स्त्री को एक नयी सोच की तरफ धकेलता है। जया जादवानी की कहानी 'जो भी यह कथा पढ़ेगा' भारतीय सांस्कृतिक जीवन के परंपरागत ढाँचे में हस्तक्षेप करती है। व्रत, अनुष्ठान, पूजा–पाठ व कर्म विधानों में उलझी हुई स्त्री स्वयं की समस्याओं की तरफ ध्यान नहीं दे पाती है। सीता और सावित्री बनने की चाह भी स्त्री के मन से आज भी नहीं निकल पाई है।

नौकरीपेशा महिलाओं के जीवन की चिन्ताएँ, पितृसत्तात्मक समाज, बाजारवाद, पूँजीवादी संस्कृति और बढ़ती हुई असीमित लालसाओं ने स्त्री के सम्मुख बहुत से संकट खड़े कर दिए है। स्त्री के सामने द्वन्द्व एवं दुविधा है। उसकी टकराहट दोहरी है, दोहरे समाज से जो कि उसे परंपरागत रूप में देखना चाहता है। स्त्री स्वावलम्बी व आत्मविश्वासी बनकर परिवार में रहे ताकि भविष्य की पीढ़ियों की नींव उस

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, Jan- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पर रखी जा सके। दैहिक संबंधों की उन्मुक्तता से विवाह संस्था चरमरा गई है। स्त्रियों ने अपने को मान लिया है कि हाँ, हम देह है। पर इसका स्वामित्व पुरुष का नहीं, स्वयं उसका है। विवाह, परिवार, दाम्पत्य, मातृत्व सब पर प्रश्न चिह्न लग गए है। इसके साथ ही गर्भपात, यौन शुचिता आदि प्रश्न भी समाज को झकझोरने वाले है।

मीडिया एवं विज्ञापन में स्त्री देह को 'वस्तु' या 'चीज' के रूप में परिवर्तित कर दिया है। स्त्री देह के द्वारा बाजार में वस्तुएँ बेची जा रही है। 'एक ज़मीन अपनी' में लेखिका चित्रा मुद्गल ने माया नगरी बम्बई व उसकी फिल्मी दुनिया के मोहजाल में फँसती नारी की स्थिति का वर्णन किया है।

मुस्लिम महिलाओं की स्थिति को उजागर करती हुस्न तबस्सुम'निहाँ' की 'ये बेवफाइयाँ' कहानी स्त्री के वजूद, उसकी अस्मिता की तलाश की है। मर्द की निगाह में 'औरत' की क्या जगह है और क्या होनी चाहिए? यह बहस भी कहानी में उठाई गई है। पति ने बड़ी उम्र में पहुँचकर दूसरी युवा स्त्री से विवाह कर लिया है और पहली औरत को मारपीट कर मायके पहुँचा दिया। बाद में पति अपनी पहली पत्नी से फिर निकाह करना चाहता है। मुस्लिम पर्सनल लॉ में मर्द जब चाहे तब औरत के अधिकारों को छीन लेता है। तीन लफ़्ज 'तलाक, तलाक, तलाक– पूरे घर की नींव हिला सकते है। स्त्री की मान, मर्यादा एवं प्रतिष्ठा का कोई अर्थ नहीं है। 'ये बेवफाईयाँ' में नायिका कहती है ''उसे दुःख है किस बात का? यही कि मर्दो का मतलबपरस्त, मुफलिसी होती है जब जोरूओं के जेवर गहने तक काम में लिए जाते हैं और जब रोटी पर रोटी रखकर खाने लगते हैं तब उन्हें ऐयाशियाँ सूझती है।.....वह तो बाहर की दुनिया में मस्त था उसे क्या पता कब किस बच्चे ने कौनसी क्लास पास की। कब बच्चों की फीस जमा हुई।..... मैने इबादत की तरह उसके कुनबे को सहेजा, समेटा है, मगर ये इबादत भी ला हासिल गई।''[1]

कनकलता की 'अनुत्तरित सवाल' में नई पीढ़ी के द्वारा बुढ़ी माँ पर किये जाने वाले अत्याचारों का वर्णन किया गया है। नारी ही नारी की दुश्मन है। वह स्वयं नारी होते हुए भी अपनी सास का मन नहीं जान पाती है और उसे अपने व्यवहार से दुःखी करती है। बेटा ——————————————————

1. मंजु चतुर्वेदी : इक्कीसवीं सदी की कहानियों में स्त्री विमर्श, *मधुमती*(अंक–3–4), मार्च–अप्रेल 2012, पृ. 14

कहता है –''आज पूजा, पाठ, तीरथ व्रत में अपना मन लगाएँ, पुण्य कमाएँ–''[1] बहु 'पेन्सिल हिल से मौसी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, Jan- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

का पाँव कुचलकर धर देती।'' [2] निरूपमा सेवती की 'टुच्चा' कहानी में घर एवं ऑफिस की जिम्मेदारी संभालती अविवाहित युवती की स्थिति का चित्रण किया गया है। परिवार में सबको पैसा प्यारा है तो ऑफिस में बॉस के द्वारा किया जाने वाला शारीरिक शोषण। उसे यह सोचने पर मजबूर करता है–''घर के लिए समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शारीरिक पूर्ति और बॉस के लिए मानसिक पूर्ति–स्वयं के लिए कुछ भी नहीं।''[3]

नारी आज पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सभी क्षेत्रों में कार्य कर रही है। संघर्ष के इस दौर में नारी ने अपनी संकुचित चारदीवारी से बाहर निकलकर व्यापक आकाश को तलाशा। बहुत सी कठिनाईयों, बाधाओं के बीच बाहरी दुनिया में अपनी अहम भूमिका तलाशी। भीड़ में धक्के खाकर अपनी जगह सुरक्षित की। बाहरी लोगों के स्पर्श और दृष्टि से छुई–मुई हो जाने वाली काया को नया नैतिक जामा पहनाया। कार्य स्थल पर असुरक्षा, काम का दबाव, पुरुषों की मनमानी आदि का सजीव चित्रण लेखिकाओं ने किया है।

आशा प्रभात की लिखी कहानी 'कैसा सच'– ग्रामीण लड़कियों, बहुओं की त्रासद जिन्दगी पर सोचने पर विवश करती है। पर्दा प्रथा व गाँव की असुविधाओं का चित्रण इसमें मिलता है अर्थात ग्रामीण परिवेश को दृष्टव्य करता है। समकालीन महिला लेखन नारी की अस्मिता व स्वतंत्र अस्तित्व की खोज का लेखन है। स्त्री की नई सोच, नई जीवन दृष्टि एवं नए दिशा बोध का लेखन है।

चित्रा मुद्गल का 'आवां' उपन्यास स्त्री विमर्श का पहला महाआख्यान है। नायिका नकिता पाण्डे स्त्री की सजगता और स्त्री शक्ति का प्रतीक बनकर उभरी है। इसमें समकालीन भारतीय स्त्री की आकांक्षाओं, यातनाओं और संघर्ष को वाणी मिली है। स्त्री के श्रमिक व पद ——————————————————

1. कनकलता : *बोन्साई,* पृ. 113
2. वही, पृ. 114
3. निरूपमा सेवती : *खामोशी को पीते हुए,* पृ. 47

दलित जीवन का चित्रण है। शर्मिला जालान की 'घोंसला' कहानी में वर्गीय विषमता और भूमंडलीकरण के दौर में पूँजीवादी मानसिकता पर प्रहार करती है।

गंदी राजनीति ने स्त्री अस्मिता को भोग की वस्तु, क्रय–विक्रय की चीज एवं राजनीति की शतरंज का मोहरा बना रखा है। यदि स्त्री परंपरागत भूमिका से निकलकर कोई उपलब्धि हासिल करती है

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, Jan- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

तो पुरुष वर्चस्व उसे कम स्वीकार कर पाता है एवं परंपरागत एवं लम्बी गुलामी को आत्मसात् करने वाली स्त्रियों को नागवार लगता है क्योंकि उन्होंने पुरुषों की गुलामी को ही सब कुछ मान लिया है।

मन्नू भंडारी की 'ऊँचाई' कहानी में शिवानी द्वारा विवाहेत्तर संबंध रखना जायज माना है। वह अपने पूर्व प्रेमी अतुल से प्रेम करती है। पति को यह बात मालूम पड़ने पर पति–पत्नी के मध्य संघर्ष और तनाव शुरू होता है। शिवानी पति के प्रति आत्मीयता को स्पष्ट करते हुए कहती है – ''किसी के कितने ही निकट चली जाऊँ, चाहे शारीरिक–संबंध कर लूँ, पर मन की जिस ऊँचाई पर तुम्हें बिठा रखा है वहाँ पर कोई नहीं आ सकता।''[1] शिवानी को इस बात का कोई प्रायश्चित नहीं है। वह सोचती है कि उसके समर्पण का उद्देश्य ऊँचा है। किसी का दुःख कम करना है। जिस समर्पण में वासना नहीं होती वह पाप नहीं है। विवाह का आधार इतना छिछला है तो उसे टूट जाना चाहिए। शिवानी की निर्भीकता और स्पष्टवादिता से पति का निर्णय बदलता है।

इन लेखिकाओं ने नारी जिन्दगी की तह में झाँककर सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व मनोवैज्ञानिक यथार्थ को प्रस्तुत किया है। निम्न व मध्यम वर्ग की संवेदनाओं के साथ महानगरीय परिवेश, महानगर का कृत्रिम जीवन वैषम्य, प्रेम, बेबसी, दाम्पत्य जीवन का टूटन व मूल्यों का अवमूल्यन चित्रित किया है।

कृष्णा सोबती के 'दिलोदानिश', 'मित्रो मरजानी', 'सुरजमुखी अंधेरे के', 'यारों के यार' और 'जिंदगीनामा' उपन्यास, मन्नू भंडारी का 'महाभोज', उषा प्रियंवदा का 'रूकोगी नहीं

———————————————

1. मन्नू भंडारी : *एक प्लैट सैलाब*, पृ. 142

राधिका', मृदुला गर्ग का 'चितकोबरा' और 'अनित्य', अलका सरावगी का उपन्यास 'कलिकथा' और 'वाया बाय पास', नासिरा शर्मा के 'शाल्मली' और 'ठीकरे की मंगनी', मंजुल भगत का 'अनारो', प्रभा खेतान का 'छिन्नमस्ता' व चित्रा मुद्गल के 'आवां' उपन्यास में स्त्री जीवन व स्त्री विमर्श का आधार मिला है। साहित्य में पुरुष लेखन के वर्चस्व को तोड़ते हुए लेखिकाओं ने समग्र लेखन को अपनाया है।

लेखिकाएँ वैश्वीकरण की स्थितियों को समझती है तो भारतीय संस्कृति को अपनाने पर भी बल दे रही है। स्त्री मन, समाज व परिवार की बदलती भूमिका पर महिला रचनाकारों ने समय की चुनौतियों को

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, Jan- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

समझकर सकारात्मक लेखन कार्य किया है।

भौतिकतावादी संस्कृति, शिक्षा में कमी, जागरूकता का अभाव, राजनीतिक शोषण, बेटे की चाहत एवं स्त्री सुरक्षा के अभाव के कारण भारत में आम महिलाओं की स्थिति शोचनीय है। ग्रामीण एवं आदिवासी स्त्रियों की दशा ओर भी खराब है। इसी स्थिति का चित्रण करते हुए 'अपने घर की तलाश में' लेखिका निर्मला पुतुल लिखती है–

''दिन रात मरती खपती

चलाती घर–घर करना

खर्चा पानी जुटाती काहिल निकम्में मर्दो

के लिए दारू ताड़ी

दिन–दिन भर भीग कर पानी में रोपती धान

बिखरा कर जिन्दगी का दर्द

लिपती–पोतती घर की दीवार

मीलों चलकर लाती पानी

नशें में धुत लड़खड़ाते मर्दो को भी देती रोज सहारा

भुख, प्यास, थकान से पस्त सहती लात घूँसे

देर रात अनुत्साहित देह पर/पाशविक ताण्डव''

आगे वे लिखती है–

''सब कुछ सहती है, लकड़ी सी घुनती है।

आँसू पीती हैं, घुट–घुटकर जीती है।

कुछ न कहती, रोज जन्मती मरती है।

चुपचाप रहती है, धरती सी सहती है।''[1]

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, Jan- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

साहित्य लेखन के बारे में कृष्णा सोबती मानती है कि साहित्य और कानून की निगाह एक नहीं हो सकती। साहित्य जीवन का दर्पण है, जीवन की बंदिश नहीं। सत्य को अपने में संजोता है और खुलेपन में पनपने देता है। मन्नू भंडारी मानती है कि जीवन के वृहत्तर मूल्यों के लिए अपनी सार्थकता के लिए विवेक, मानवीय संवेदना और सह–अनुभूति की आवश्यकता होती है, ईश्वर की नहीं। वहीं दीप्ति खंडेलवाल की विचारधारा के अनुसार प्रकाश में आस्था है और प्रकाश व अंधकार के भेद को वह दृढ़ता से स्वीकार करती है– जिद की हद् तक। जबकि शशिप्रभा शास्त्री कहती है कि घृणा या अवमानना मेरे मन में अब उस व्यक्ति के प्रति उभरती है जो वचन देकर भी उसके निर्वाह में कोताही करता है, धार्मिकता का स्वांग रचकर भीतर प्रकोष्ठों में रंगरेलिया रचता है। जो अपने दायित्व और कार्य के प्रति ईमानदारी नहीं निभा पाता, केवल बात करता है, सिर्फ बात। वाचिक नैतिकता के स्थान पर नूतन परिस्थितियों में उत्पन्न होने वाले नये मूल्यों को स्वीकार करना अधिक पसंद करती है। इस प्रकार वर्तमान लेखिकाओं में बुद्धिवादी सोच से भाव पक्ष पीछे रह गया है। वर्तमान लेखिकाओं का विषय प्रमुख रूप से निम्न तत्वों पर केन्द्रित हो जाता है–

———————————————

1. निर्मला पुतल : *समकालीन भारतीय साहित्य* (अंक 125), मई–जुन 2009, पृ. 123

1. **प्रेम भावना –** प्रेम नारी की सबसे बड़ी दुर्बलता है। उसी का कोमल आधार लोक में नारी का मन, सहज ही पुरुष की ओर आकर्षित होता है। शशिप्रभा शास्त्री ने नारी प्रेम के बारे में कहा है कि तनिक से भी स्नेह की आँच पाते ही मन कितनी जल्दी पिघल उठता है। विश्वास के कितने बड़े ताने–बाने बुने जाने लगते हैं, सपनों की पेंगे कितनी दूर तक उड़ाने लेने लगती हैं, जिन्दगी भर निर्वाह करने की सामर्थ्य जुटाने की क्रिया–प्रक्रिया कितनी सजग हो उठती है– निरीह अशक्त होकर एक नन्हीं सी रसधार में तिरने की कितनी बड़ी क्षमता स्वयं में समाये हुए हूँ– मुझे कभी–कभी खुद आश्चर्य होता है।
2. **दाम्पत्य जीवन –** लेखिकाओं ने अपने कथा साहित्य में दाम्पत्य जीवन का चित्रण किया है। कथा साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव भी स्पष्ट झलकता है। विवाह व उसके बाद के जीवन में यदि जोर जबरदस्ती या पारस्परिक दबाव की स्थिति में वे संबंधों को खत्म करने पर भी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, Jan- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

बल देती है जो स्त्री के सम्पूर्ण विकास के लिए आवश्यक है। दहेज, तलाक, आर्थिक समस्याओं व अनमेल विवाह की स्थितियों का चित्रण भी किया है।

3. **नौकरी –** नौकरी या व्यवसाय के प्रति अपनी धारणा को व्यक्त करती हुई प्रभा खेतान 'पीली आँधी' में कहती है ''दोहरी भूमिका निभानें के साथ–साथ उसे जीवन में परस्पर विरोधी लक्ष्य लेकर भी चलना पड़ता है। विवाह जहाँ आत्मत्याग एवं सहयोग की मांग करता है वहीं कामकाज, आलोचना एवं प्रतिस्पर्धा की दोहरी जिम्मेदारी के दावों की चिंता न केवल क्लान्त करती है, बल्कि यह समस्या स्वयं भी एक समस्या का रूप ले सकती है।''[1]

आम 'स्त्री की समग्र मानसिकता' को जया जादवानी ने इस प्रकार व्यक्त किया है–

''वह पलटती है, रोटी तवे पर

———————————————

1. प्रभा खेतान : पीली आँधी, पृ. 27

और बदल जाती है, पूरी की पूरी दुनिया

खड़ी रहती है, वहीं की वहीं

स्त्री, तमाम रोटी सिक जाने के बाद भी।'' [1]

सम्पूर्ण स्वतंत्रता के बाद आज की औरत न तो अतीत के वैभव को भोग पाती है, न ही वर्तमान की स्वछंदता का आलिंगन करती है। वह बीच में हैं, उससे बाहर नौकरी करने की आशा भी की जाती है और घर पर पति या घर वालों के आदेश की गुलामी भी भोगनी पड़ती है, ऐसी प्रगति में जीना आज की नारी की नियति है। मृदुला गर्ग लिखती है कि नारी और पुरुष अपनी–अपनी जगह पूर्वत्व की खोज में प्रयत्नशील हैं, किन्तु खोज की हर दिशा उनके व्यक्तित्व को खंडित कर रही है। इस खोज में नारी के कई चित्र उभर रहे है। परम्परागत वर्जनाओं से आधुनिक नारी जैसे–जैसे मुक्त हो रही है, नवीन समस्याओं का सामना कर रही है। आर्थिक स्वावलम्बन और मानसिक स्वतंत्रता के कारण वह अपने जीवन को अच्छा या बुरा बनाने के लिए स्वतंत्र है।

महिला लेखिकाओं की बदलती सौन्दर्य दृष्टि से कई लाभ हुए है–

1. नये दाम्पत्य जीवन की शुरूआत।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, Jan- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

2. बच्चों का सर्वांगीण विकास।
3. सांस्कृतिक वातावरण का निर्माण।
4. मानव मूल्यों की स्थापना।
5. कल्पना से दूर यथार्थ जीवन की शुरूआत।

वर्तमान स्त्री पूरे आत्मसम्मान एवं अपने परिवेश के अनुसार जीवन जीना चाहती है। स्त्री और पुरुष एक दूसरे के सहभागी बनकर जीने की आदत डालेंगे तो नये युग के अनुसार सुन्दर जीवन जी सकते है। पुरुष अपनी काम पिपासा कम कर यदि स्त्री पर अनैतिक अत्याचार न करें तो स्त्री विमर्श एवं आंदोलन की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। स्त्री के व्यक्तिगत

———————————————————

1. जया जादवानी : स्त्री की समग्र मानसिकता, *पंचशील* (अंक–15), *जनवरी–मार्च 2012,पृ. 35*
2. जीवन का उद्देश्य व दर्शन बदल रहा है। मानसिक अन्तर्द्वन्द्व एवं भौतिक संघर्ष का नूतन भाव प्रदान कर वह अपनी नारी गरिमा को निखार रही है। वह परिस्थितियों से समन्वय करना सीख गई है। वह बलात्कारियों से निपट सकती है। लेखिकाओं ने स्त्री के नवीन सौन्दर्य को भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में ही रखकर देखा है व पुरुष प्रधान मानसिकता को सुलझाया है। ये लेखिकाएँ स्त्री स्वातंत्र्य के नाम पर पश्चिमी अंधानुकरण एवं बनावटीपन का विरोध करती है। उषा प्रियंवदा की 'संबंध', 'स्वीकृति' और 'वापसी'; शिवानी की 'प्रतिशोध', 'स्वयंसिद्धा', 'अपराजिता' और 'निर्वाण'; शशिप्रभा शास्त्री की 'गंध', 'अनुत्तरित' और 'ग्रोथ'; दीप्ति खंडेलवाल की 'क्षितीज', 'एक पारों पुरवैया' और 'धूप के अहसास में'; कृष्ण अग्निहोत्री की 'अर्थहीन'; मृणाल पाण्डे की 'बर्फ'; निरूपमा सेवती की 'तलफलाहट' आदि में पति–पत्नी के संबंधों में पत्नी की भूमिका या दोनों की भूमिका पर प्रश्न चिह्न दिखाई देता है।

लेखिकाओं ने परम्परागत नियमों को तोड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उक्त परम्पराएँ पुरुष समाज द्वारा विभिन्न प्रकार के स्व हित के संदर्भ में बनाई गई थी, ''उनकी कहानियों में पुरुष–वर्चस्व को झेलते स्त्री पात्रों का चित्रण है। इसके बावजूद उनकी दृष्टि व्यापक है। उन्होंने स्त्री–पुरुष संबंधों के संदर्भ में पारंपरिक नैतिक मूल्यों के विघटन, रिश्तों के खोखलेपन, काम अतृप्ति, बलात्कार और स्त्री पर होने वाले उसके मनोवैज्ञानिक प्रभाव आदि का चित्रण अपनी कहानियों में किया है। उन्होंने अपनी कुछ कहानियों में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 1, Jan- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

यौन–संबंधों का काफ़ी खुला और साहसिक चित्रण किया है। परन्तु राजी सेठ ने अपनी कहानियों में स्त्री–पुरुष संबंधों के सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक पक्षों पर ज़्यादा बल दिया है। यों, स्त्री–पुरुष संबंधों को ले कर प्रायः वही प्रश्न उठायें हैं, जो अन्य लेखिकाओं ने उठाये हैं, अर्थात प्रेम–विवाह और उसकी असफलता, नारी की स्वातंत्र्य–कामना, पति का पत्नी के प्रति अमानवीय व्यवहार, पति का पुरुष अहं, पति–पत्नी के बीच मानसिक दूरी, पत्नी की पति से आत्मीयता की आकांक्षा, नयी स्थितियों में जीने के लिए विवश स्त्रियों की मानसिक यातना, स्त्रियों की आर्थिक पराधीनता आदि।''[1]

————————::::::::::::::::::::::::————————

1. नगेन्द्र एवं हरदयाल, इतिहास, पृ. 755–56